पाठ 9

हड़प्पा सभ्यता

आइए सीखें

- प्राचीन सभ्यताएँ नदियों के किनारे क्यों विकसित हुई थीं?
- सिन्धुघाटी सभ्यता/हड़प्पा सभ्यता क्या थी?
- हड़प्पा सभ्यता के पतन के क्या कारण थे?

आदि मानव हमेशा वहीं बसता था, जहाँ उसे पीने के लिए स्वच्छ जल, खाने के लिए भरपूर भोजन और निवास के लिए सुरक्षित स्थान आसानी से उपलब्ध थे। नदियों के किनारे इन तीनों आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से होने के कारण विश्व की प्राचीनतम सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुई। इसलिए इन सभ्यताओं को **नदी घाटी सभ्यता** कहते हैं।

दिये गए मानचित्र को देखकर पता लगाओ कि कौन-सी सभ्यता किन-किन नदियों के किनारे विकसित हुई। जानकारी को नीचे लिखिए-

---

शिक्षण संकेत : बच्चों को मानचित्र का अध्ययन कराते हुए बताए कि प्राचीन सभ्यताएँ किन-किन नदियों के किनारे विकसित हुई व उनसे तालिका भरवाएँ। आवश्यकतानुसार श्यामपट का प्रयोग करें।

सभ्यता	नदी का नाम
__________	__________
__________	__________
__________	__________
__________	__________
__________	__________

इनमें अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित मिस्र की सभ्यता सबसे पुरानी है। यह नील नदी की घाटी में विकसित हुई। दूसरी है मेसोपोटामिया की सभ्यता।

मेसोपोटामिया का अर्थ है दो नदियों के बीच का भू-भाग। ये दो नदियाँ हैं- दजला एवं फरात। इन नदियों के मध्य विकसित हुई सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता कहलाती है। यह सभ्यता 5000 से 500 ई.पू. तक विद्यमान थी। वर्तमान इराक और ईरान का कुछ क्षेत्र भी इसमें सम्मिलित था। तीसरी है चीन की सभ्यता। इसका उदय ह्वाग हो नदी के तटों पर (1750 ई.पू. से 220 ई.) हुआ। चौथी है सिंधु घाटी की सभ्यता जिसका विकास आज से लगभग 4500 वर्ष पूर्व उत्तरी पश्चिम प्रायद्वीप में हुआ जिसका कुछ हिस्सा अब पाकिस्तान में है।

नदी घाटी में मानव सभ्यता के विकास के कारण

लाखों वर्ष तक मानव शिकारी और भोजन संग्राहक का जीवन जीता रहा। धीरे-धीरे उसने पशुपालन करना सीखा। कोई दस हजार वर्ष पूर्व उसने खेती करना प्रारंभ किया। उसने अपने सैकड़ों वर्षों के अनुभव से यह सीख लिया था कि मिट्टी में बीज डालने और सींचने से पौधा उगता है।

नदियों के किनारे की मिट्टी उपजाऊ होती है। यहाँ पानी आसानी से मिल जाता है। नदी से नाव या लट्ठे की सहायता से आवागमन की सुविधा रहती है। जानवरों के लिए घास तथा जल आसानी से मिल जाता है। इन सब कारणों से आदि मानव ने नदी की घाटियों में बसना प्रारंभ किया। तब भी मानव पाषाण उपकरणों का प्रयोग करता था।

लगभग 7000 वर्ष पूर्व ताँबे की खोज ने मानव के जीवन में परिवर्तन कर दिया। ताँबा कठोर पत्थर की तुलना में अधिक प्रभावकारी था। टिन के मिश्रण से निर्मित ताँबा पत्थर से भी अधिक मजबूत था। ताँबे के प्रयोग के कारण मानव पाषाण काल से निकलकर ताम्राश्मकाल* (ताँबे व पाषाण) में प्रवेश कर गया।

ताम्राश्मकाल में नदी घाटी सभ्यता का विकास एक लंबे-चौड़े भाग में हुआ। भारत में इस काल की सबसे पुरानी बस्तियाँ दक्षिण पूर्वी राजस्थान (आहार) मध्यप्रदेश में मालवा में (कायथा और एरण) पश्चिमी महाराष्ट्र में (जोखा, नेवासा व दैमाबाद) में मिली है। नर्मदा नदी के तट पर नवदा टोली स्थान पर भी ताम्र पाषाणिक अवशेष मिले हैं।

* ऐसा समय जब ताँबे एवं पत्थर के औजार साथ-साथ प्रयोग किये जाते थे। ताम्राश्मकाल या ताम्र पाषाण काल कहते हैं।

सिन्धु घाटी सभ्यता की खोज

सन् 1921 के पूर्व तक भारत की प्राचीनतम सभ्यता वैदिक सभ्यता ही मानी जाती थी। सबसे पहले श्री दयाराम साहनी ने 1921 ई. में हडप्पा में खुदाई आरम्भ कर वहाँ एक नगर के भग्नावशेष प्राप्त किये तत्पश्चात् श्री राखलदास बैनर्जी ने सन् 1922 ई. में सिंध प्रान्त के लरकाना जिले में बौद्ध-स्तूपों की खोज करते हुए कुछ टीलों को खुदवाया, तो वहां भूगर्भ में पक्की नालियाँ और कमरे मिले। इसके बाद तो इस क्षेत्र में 10 वर्षों तक उत्खनन चला तथा अनेक जानकारियाँ प्रकाश में आयीं।

इसी बीच रायबहादुर दयाराम साहनी और माधव स्वरूप वत्स ने हिमालय के तलहटी क्षेत्रों में मानव सभ्यता के प्रमाण खोजे जिसके आधार पर उत्खनन कार्य प्रारंभ हुआ। खुदाई का कार्य हड़प्पा में शुरु हुआ। इस कारण इसे हड़प्पा सभ्यता कहा गया। इसे **'सिन्धु घाटी सभ्यता'** भी कहा जाता है।

धीरे-धीरे इस सभ्यता की खोज विभिन्न स्थलों पर हुई। इसके विस्तार को देखकर पता चलता है कि भौगोलिक दृष्टि से यह विश्व की सबसे बड़ी सभ्यता थी। इसका क्षेत्र मिस्र की सभ्यता के क्षेत्र से 20 गुना अधिक था। इस सभ्यता का विकास भारत और पाकिस्तान के उत्तरी और पश्चिमी भाग में सिन्धु नदी की घाटी में हुआ। सिन्धु घाटी के कारण इस सभ्यता को सिन्धु घाटी सभ्यता के नाम से पुकारा गया। इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान, दक्षिणी अफगानिस्तान तथा भारत के राजस्थान, गुजरात, जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरियाणा पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र राज्य तक है।

इस सभ्यता के कुछ प्रमुख स्थल ये हैं- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तथा चन्हुदड़ो (पाकिस्तान), रोपड़ (पंजाब), रंगपुर (सौराष्ट्र) लोथल, सुतकोटडा (गुजरात) कालीबंगा (राजस्थान) धौलाबीरा (गुजरात) बणाबली, राखीगढ़ी (हरियाणा), मांडा (जम्मू कश्मीर) दैमाबाद (महाराष्ट्र), आलमगीरपुर, हुलास (उत्तरप्रदेश) इत्यादि।

नगरीय जीवन

हड़प्पा सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी नगर योजना प्रणाली थी। नगर अधिकतर दो अथवा तीन भागों में बंटे थे। सबसे सुरक्षित स्थान किला या दुर्ग कहलाता था। यहाँ उच्च वर्ग का परिवार रहता होगा। नगर के निचले भाग में मध्यम व निम्न वर्ग का निवास था। इन नगरों में सड़कें पूरी सीधी थीं व एक-दूसरे को लंबवत काटती थीं। नगर अनेक खण्डों में विभक्त होता था जैसा कि आजकल के नगर होते हैं। हड़प्पा सभ्यता के नगरों में कोठार (अनाज भरने के गोदाम) का महत्वपूर्ण स्थान था। हड़प्पा तथा कालीबंगा में भी इनके प्रमाण मिले हैं।

मोहनजोदड़ो का सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल विशाल स्नानागार है। यह 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा है। इसके दोनों सिरों पर तल तक सीढ़ियाँ बनी हैं। बगल में कपड़े बदलने के कक्ष हैं। स्नानागार का फर्श पक्की ईटों का बना है। पास के एक कमरे में बड़ा सा कुआँ बना है। संभवत: यह स्नानागार किसी धार्मिक अनुष्ठान संबंधी स्नान के लिए बना होगा।

इसके अलावा भी हर छोटे-बड़े मकान में आंगन (प्रांगण) और स्नानागार होता था। पर्यावरण की दृष्टि से जल निकास प्रणाली अद्‌भुत थी। घरों का पानी बहकर सड़कों तक आता था। यहाँ यह पानी मुख्य नाली से मिलता जो ईटों व पत्थर की पट्टियों से ढँकी होती थी। सड़कों की मुख्य नालियों में सफाई की दृष्टि से नरमोखे (मेनहोल) भी बने थे। उनके द्वारा नालियों की समय-समय पर सफाई की जाती थी। ताम्राश्म युगीन सभ्यता में हड़प्पा की जल निकास प्रणाली अद्वितीय थी। विश्व की किसी अन्य सभ्यता में सफाई को इतना महत्व नहीं दिया जाता था जितना की हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने दिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि हड़प्पा सभ्यता में पर्यावरण शुद्धि की ओर अधिक ध्यान दिया जाता था।

- **हड़प्पा सभ्यता में भवनों के लिए पक्की ईटों का प्रयोग विशेष बात थीं। समकालीन मिस्र की सभ्यता व मेसोपोटामिया की सभ्यता में इसका प्रचलन नहीं था।**
- **हड़प्पा निवासी विश्व के प्रथम लोग थे जिन्होंने विस्तृत सड़कों और नालियों से युक्त सुनियोजित नगर का निर्माण किया।**

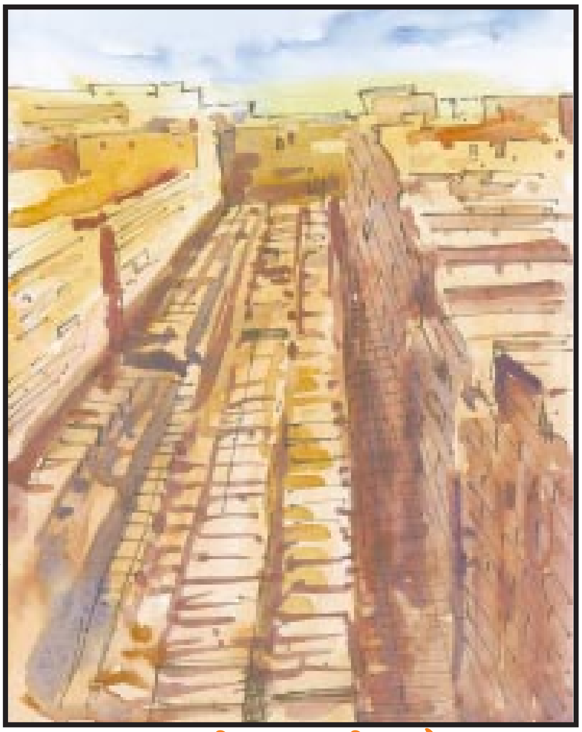

हड़प्पाकालीन नगर की सड़कें एवं ढकी हुई नालियाँ

कृषि व पशुपालन-

हड़प्पा सभ्यता की जीवन दायिनी नदी सिन्धु थी। यह नदी अपने साथ भारी मात्रा में उपजाऊ जलोढ मिट्टी लाती थी। हड़प्पा सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, सरसौ, कपास, मटर तथा तिल की फसलें उगाते थे। संभवत: किसानों से राजस्व के रूप में अनाज लिया जाता था। हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न नगरों में मिले कोठार (अनाज गोदाम) इसके प्रमाण हैं।

कालीबंगा में पाये गये जुताई के मैदान से प्रतीत होता है कि उनका खेती का तरीका आज की तरह ही था।

हड़प्पा निवासी कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी करते थे। ये बैल-गाय, बकरी, भेड़, सूअर, भैंस, कुत्ता, ऊँट तथा हाथी, घोड़ा पालते थे। ये सिंह, गेंडा, हंस, बतख, बन्दर, खरगोश, मोर, हिरण, मुर्गा,

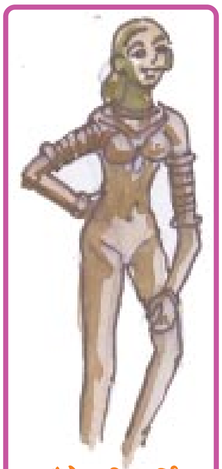

काँसे की मूर्ति

काँसे के बर्तन एवं औजार

मिट्टी के खिलौने

मिट्टी के बर्तन

पत्थर के औजार

तोता, उल्लू आदि जानवरों से परिचित थे। इनमें से कुछ जानवरों की स्वतंत्र आकृतियाँ व कुछ का अंकन मिट्टी की मुहरों पर मिला है।

- **हड़प्पा निवासी विश्व के प्रथम लोग थे जिन्होंने कपास का उत्पादन सबसे पहले सिन्धु क्षेत्र में किया । मोहनजोदड़ो में बुने हुए सूती कपड़े का एक टुकड़ा मिला है, और कई वस्तुओं पर कपड़े के छापे भी मिले हैं। कताई के लिए तकलियों का इस्तेमाल होता था।**
- **गुजरात के हड़प्पा सभ्यता के लोग चावल उपजाते थे और हाथी पालते थे। ये दोनों बातें मेसोपोटामिया के निवासियों को ज्ञात न थी।**

शिल्प तथा तकनीकी ज्ञान

हड़प्पा सभ्यता ताम्राश्म काल की है। यह कांस्य युग भी कहलाता है। ताँबे में जिंक/टिन मिलाकर कांसा बनाया जाता था। कांसा ताँबे की तुलना में अधिक मजबूत होता है। खुदाई से प्राप्त सामग्री के आधार पर ज्ञात होता है कि इस सभ्यता के लोगों ने धातुओं के गलाने, ढालने और सम्मिश्रण की कला में विशेष उन्नति की थी। मिट्टी के बर्तन बनाने, खिलौने बनाने, मुहरें निर्माण करने में यहां के कलाकार सिद्धहस्त थे। प्रतिमाओं को पकाया भी जाता था। इसके अलावा स्वर्णकार चांदी, सोना और रत्नों के आभूषण और विभिन्न रंगों के मनके भी बनाते थे। कांसे की नर्तकी उनकी मूर्तिकला का सर्वश्रेष्ठ नमूना है।

धार्मिक मान्यताएँ

हड़प्पा सभ्यता में किसी भी देवालय के प्रमाण नहीं मिले हैं। पकी हुई मिट्टी की स्त्री प्रतिमाएं भारी संख्या में मिली हैं। इससे अनुमान होता है कि देवी उपासना प्रचलित थी। एक मुहर पर तीन सींग युक्त ध्यान करते हुए देवता का अंकन है। यह पद्मासन में बैठा है। इसके आसपास एक हाथी, एक बाघ, एक गेंडा, एक भैंसा व दो हिरण का अंकन है। कुछ पुरातत्वविदों ने इस देवता की पहचान पशुपति (शिव) के रूप में की है।

हड़प्पा में पकी मिट्टी व पत्थर पर बनें लिंग और योनि के अनेक प्रतीक मिले हैं। इसके अलावा कमण्डल, यज्ञवेदी, स्वास्तिक आदि के अवशेष हड़प्पा सभ्यता के लोगों के धार्मिक विचारों व क्रिया-कलापों की जानकारी प्रदान करते हैं।

मध्यप्रदेश के कायथा (जिला उज्जैन) की खुदाई से हड़प्पा सभ्यता के समान एक मुहर, सेलखेड़ी के मनके, मिट्टी की मूर्तियाँ तथा मिट्टी के बर्तन मिले हैं।

कूबड़ वाले सांड की मृणमूर्ति तथा अंकन कई मुहरों पर मिलता है। उत्खनन में ताबीज बड़ी तादाद में मिले हैं। शायद हड़प्पावासी भूत-प्रेतों में विश्वास कर उनसे रक्षा के लिये ताबीज पहनते थे।

हड़प्पा सभ्यता में पीपल के वृक्ष की पूजा के प्रमाण मृणमुहरों तथा पात्रों पर मिलते हैं। इस वृक्ष की उपासना आज तक जारी है। भारतीय पीपल को पवित्र वृक्ष मानते हैं। वैज्ञानिक भी इस वृक्ष को पर्यावरण शुद्धि की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते हैं। पात्रों पर किये कई चित्रण धार्मिक विचारों की जानकारी प्रदान करते हैं। कुछ पात्रों पर मोर का अंकन मिलता है। आज भी भारत के विभिन्न अंचलों में कुम्हार लोग अपने द्वारा निर्मित पात्रों में मोर का अंकन करते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के लोगों के विभिन्न धार्मिक विश्वास भले ही रहे हों परन्तु वे योग विद्या के प्रारंभिक जनक भी थे। मृणमुहरों पर प्राप्त चित्रांकन से इस बात की पुष्टि होती है कि हड़प्पावासी योगिक क्रियाओं के जानकार थे।

लिपि

हड़प्पन लिपि

हड़प्पावासियों को लेखन कला का भी ज्ञान था। संभवत: उनकी लिपि चित्र लिपि थी। इन्हें चित्र या अक्षर के रूप में लिखा जाता था। लेकिन इस लिपि को आज तक सुनिश्चित रूप से पढ़ा नहीं जा सका है।

माप-तौल

हड़प्पावासी माप-तौल के तरीकों से परिचित थे। माप हेतु ये 'बाट' और 'दंड' का प्रयोग करते थे। खुदाई से बाट व कांसे का माप का उपकरण (पैमाना) प्राप्त हुआ है।

मुहरें

हड़प्पावासियों की सर्वोत्तम कलाकृतियाँ उनकी मृणमुद्राएं हैं। अब तक खुदाई से लगभग 5000 मुद्राएं प्राप्त हो चुकी हैं। इन पर जानवरों की आकृतियाँ तथा लघु लेख अंकित है।

हड़प्पा सभ्यता का पतन

इस सभ्यता के इतने बड़े नगर जमीन में दबकर कैसे नष्ट हो गये, इस संबंध में अब तक इतिहासकार पूरी तरह से संतुष्ट नहीं है। अब तक प्राप्त प्रमाणों के अनुसार ऐसा अनुमान है कि इतनी विशाल सभ्यता के पतन में निम्नलिखित कारक उत्तरदायी रहे होंगे:-

1. भूकम्प आने के कारण संभवत: सिंधु नदी का मार्ग बदल गया होगा और ये नगर भूस्खलन में जमीन में दब गया होगा।
2. इस क्षेत्र में वर्षा की कमी व बढ़ते हुए रेगिस्तान से इस क्षेत्र में खेती तथा पशुपालन पर बुरा असर पड़ा होगा और इस सभ्यता का पतन हो गया।
3. कुछ लोगों का अनुमान है कि सिंधु नदी में बाढ़ आई होगी और सभ्यता का अन्त हो गया होगा।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए-

(अ) हड़प्पा सभ्यता में किस पेड़ की पूजा के प्रमाण मिले हैं?

(ब) हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख चार स्थलों के नाम लिखिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (लघुउत्तरीय) लिखिए-

(अ) नदी घाटी सभ्यता नदियों के किनारे ही क्यों विकसित हुई?

(ब) हड़प्पा सभ्यता के शिल्प व तकनीकी ज्ञान के बारे में लिखिए।

(स) हड़प्पा सभ्यता में कौन-कौन सी फसलें उगायी जाती थी?

(द) सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ क्या है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) हड़प्पावासियों की नगर रचना का वर्णन कीजिए।

(ब) हड़प्पावासियों के धार्मिक विश्वासों के बारे में तुम क्या जानते है? लिखिए।

(स) हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों को लिखिए।

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. मोहनजोदड़ो का सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल विशाल .... है। (गोदाम/स्नानागार)

ब. हड़प्पा सभ्यता .... सभ्यता है। (नगरीय/ग्रामीण)

स. कांसे की नर्तकी हड़प्पा सभ्यता की .... का सर्वश्रेष्ठ नमूना है। (मूर्तिकला/वास्तुकला)

द. कूबड़ वाले सांड का अंकन कई .... पर मिलता है। (भवनों/मुहरों)

य. हड़प्पावासियों की लिपि .... लिपि थी। (देवनागरी/चित्र)

र. हड़प्पा सभ्यता में .... व पर्यावरण शुद्धि पर अधिक ध्यान दिया गया था। (गंदगी/साफ-सफाई)

5. नदी घाटी और उनमें विकसित सभ्यताओं की सही जोड़ी मिलाओ-

क	ख
अ. नील नदी घाटी	मोहनजोदड़ो व हड़प्पा सभ्यता
ब. दजला-फरात नदी घाटी	मिश्र की सभ्यता
स. सिंधु घाटी	चीन की सभ्यता
द. ह्वाग हो नदी घाटी	मेसोपोटामिया की सभ्यता

6. सही विकल्प चुनिए-

1. हड़प्पा सभ्यता में कौन सी विशेषता नहीं पाई गयी-

   (i) सुनियोजित नगरीय व्यवस्था (ii) धातु गलाने व ढलाने की कला

   (iii) पेड़ों व गुफाओं में रहना (iv) पशुपालन व कृषि

2. हड़प्पावासी कौन सी धातु का उपयोग अधिक करते थे-

   (i) लोहा (ii) ताँबा (iii) सोना (iv) चाँदी

3. हड़प्पा सभ्यता के पतन के संभावित कारणों में से नहीं था-

   (i) आग लगना (ii) आर्यों का आक्रमण (iii) मुगलों का आक्रमण (iv) तेज वर्षा

प्रोजेक्ट कार्य-

- मानचित्र में निम्नलिखित नगरों को दर्शाइए-
  हड़प्पा, कालीबंगा, लोथल, रोपड़।

❖❖❖❖